International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा भावे के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान परिपेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन''

श्रीमान् पवन कुमार आर्य
सहायक प्रोफेसर
दिल्ली इन्स्टीट्यूट ऑफ रूरल डिवलपमेंट,दिल्ली।

भूमिका

शिक्षा एक ऐसा प्रकाश है जो जीवन के समस्त अंधकार को दूर करती है और मनुष्य की नई राह दिखाती है। शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है।

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक शिक्षा को किसी न किसी रूप में ग्रहण करता है। शिक्षा पग–पग पर व्यक्ति के जीवन को सहारा देती है। बिना शिक्षा के व्यक्ति निःसहाय तथा कमजोर एवं शिथिल पड़ जाता है।

शिक्षा वह प्रकाश है जो जीवन के समस्त अंधकार को दूर कर व्यक्ति में पवित्र विचारों, संस्कारों, भावनाओं, निश्चित दृष्टिकोण और भावी विवेक को जन्म देती है। शिक्षा का कार्यक्षेत्र अत्यन्त ही विशाल एवं व्यापक है। शिक्षा मानवीय जीवन को वातावरण के अनुरूप ढालते हुए हर प्रकार से योग्य चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर तथा साहसी एवं उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर उसका सर्वांगीण विकास करती है।

शिक्षा जीनव भर चलती रहती है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। उसका सम्पूर्ण जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके ज्ञान भंडार में वृद्धि होती रहती है। शिक्षा में वे सभी बातें आ जाती हैं जो निर्माणकारी प्रभाव डालती हैं। शिक्षा का अर्थ केवल वैयक्तिक विकास नहीं है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। अतः शिक्षा द्वारा उसका सामाजिक विकास करना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब उसे उचित शिक्षा दी जाये।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सांमजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है तथा उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। उसे अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। व्यक्ति को अपने जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है, और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिर्वतन करती है जो समाज देश और विश्व के लिए हितकर होते हैं।

दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति करना है। दर्शन ज्ञान प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न है। दर्शन ही जीवन के लिए आवश्यकता है, दर्शन द्वारा जीवन को उपयोगी बनाया जाता है। दर्शन, 'सम्पूर्ण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सत्य' का संश्लेषित रूप में अध्ययन प्रस्तुत करता है। ध्वसले के शब्दों मे – मनुष्य अपने जीवन दर्शन तथा, अपनी धारणा के अनुसार जीवन व्यतीत करता है।

दर्शन की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए रॉस (त्वे) ने कहा है ''सच्चा जीवन दर्शन अपने में एक महत्वपूर्ण है तथा जीवन व्यतीत करने का एक प्रयास है।'' दर्शन जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करता हे।

अल्फर्ड बेवर ने कहा है कि ''दर्शन का मुख्य उद्देश्य प्रकृति को अपने पूर्ण रूप से समझना है। इसी से हम सृष्टि की वस्तुओं को समझने का प्रयत्न करते हैं। दर्शन उन विचारों का समूह है जो सम्भव हो सकता है।'' प्लेटो ने कहा है ''दर्शन वह विज्ञान हे जो परमतत्त्व के यथार्थ स्वरूप की जांच करता है। अरस्तु के शब्दों में ''दर्शन वास्तविकता का तत्व है।

अतः विशाल अर्थों में देखा जाए तो शिक्षा ही जीवन है और जीवन ही शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही धरती पर सभी प्राणियों से मनुष्य का जीवन सर्वोत्तम है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर का जीवन परिचय

स्वदेश और साहित्य के प्रेमी महाकवि रवींद्र नाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता के प्रसिद्ध ठाकुर वंश में हुआ था। ठाकुर का अर्थ हिंदी प्रांतों में क्षत्रियों से लिया जाता है। परंतु रवींद्र नाथ ब्राह्मण थे, यद्यपि कुछ प्राचीनवादी बादशाही जमाने की किसी घटना के आधार पर उनको ''ब्राह्मण'' से हीन कहते थे, पर धन, मान, विद्या, पदवी सब बातों की दृष्टि से यह वंश बंगाल के सर्वोच्च घरानों में से एक समझा जाता था। रवींद्र नाथ के पिता महर्षि देवेंद्र नाथ ठाकुर देश के एक माननीय धार्मिक और सामाजिक नेता थे और उनके सभी भाई बहुत ऊँचे पदों पर आसीन थे।

रवि बाबू के पिता प्रायः बाहर रहते थे और माता बीमार रहा करती थी, इसलिए इनकी देखभाल प्रायः नौकरों के ही जिम्मे रहती थी। घर का वह नौकर प्रायः इनको बैठाकर इनके चारों तरफ एक लकीर खींच देता और इनसे कहता कि, यदि तुम इस लकीर के बाहर पैर रखोगे तो बड़ी हानि उठाओगे। इस प्रकार इनको डराकर वह बाजार चला जाता और बड़ी देर में लौटकर आता। रवींद्र को उस घेरे में बैठे–बैठे बड़ा कष्ट प्रतीत होता, पर अबोध होने के कारण वे उससे बाहर नहीं निकलते। फिर कुछ बड़े होने पर जब उनको स्कूल भेज गया तो वहाँ भी शिक्षकों का कठोर शासन, डाँट–फटकार और धमकाते रहना ही दिखाई पड़ा था। घर में भी वे अपने चौदह भाई–बहिनों में सबसे छोटे थे, इसलिए सबसे दबना पड़ता। इन परिस्थितियों में उनका स्वभाव अंतर्मुख होने लगा और वे कल्पना–लोक में विचरण करके मन को प्रसन्न करने की चेष्टा करने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लगे। संभवतः इसी परिस्थिति ने भी उनके भीतर निहित ''कवि'' को अपेक्षाकृत शीघ्र जागृत किया और 13 वर्ष की आयु से ही उनकी कविताएँ मासिक पत्रों में प्रकाशित होने लगी।

ठाकुर परिवार के प्रयत्न से कलकत्ता में एक हिंदू मेला प्रचलित किया गया था। इसमें देश की बनी अनेक वस्तुओं और सूती, रेशमी वस्त्र आदि का प्रदर्शन होता था। अनेक कारीगर अपने गुण का परिचय देने को इसमें भाग लेते थे। संगीत, कविता और साहित्य चर्चा भी होती थी। उसी छोटी आयु में एक बार उस अवसर पर आपने स्वदेशी–प्रेम के संबंध में बड़ी सुंदर कविता पढ़ी। इसे जनता ने बहुत पसंद किया और उसे अमृत बाजार पत्रिका में प्रकाशित भी किया गया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर का साहित्यिक–जीवन अनेक वर्तमान लेखकों को प्रेरणात्मक सिद्ध हो सकता है। उन्होंने दृढ़तापूर्वक साहित्य–साधना करके इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त की। उनके घर वाले उनको एक बड़ा बैरिस्टर अथवा सरकारी अफसर बनाना चाहते थे, पर उन्होंने उन उच्च पदों की तरफ आकर्षित न होकर अपनी समस्त शक्ति साहित्य सेवा के लिए ही अर्पित कर दी। यह सच है कि उनको कुछ विशेष साधन प्राप्त थे, पर तब भी उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त करने में पर्याप्त परिश्रम किया। आजकल अनेक व्यक्ति सामान्य प्रतिभा और साधनों के बल पर ही सुलेखक होने का स्वप्न देखा करते हैं और आश्चर्य यह कि वे इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित परिश्रम भी नहीं करना चाहते। उनकी इच्छा यही रहती है कि वे आरंभ में ही जो कुछ भला–बुरा लिखें, वही छप जाए और उनकी प्रशंसा होने लगे। पर किसी भी कार्य में इस प्रकार थोथी इच्छाओं से सफलता नहीं मिल सकती। अगर वे रवि बाबू की तरह अपनी शक्तियों को लक्ष्य की पूर्ति में लगा दें और उसके लिए आवश्यक परिश्रम और त्याग करें तो वे अवश्य सफल मनोरथ हो सकते हैं।

संत विनोबा भावे का जीवन परिचय

संत विनोबा भावे जी का जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के गामोदा नामक गांव में 11 सितम्बर सन् 1895 ई0 में हुआ था। मानव कल्याण मात्र बारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत के पालन की प्रतिज्ञा की। विनोबा जी ने सत्यदेव परिब्राजक का स्मरण कराया है वहीं उन्होंने दूसरी और ''देश भक्ति ही ईश्वर भक्ति'' का पवित्र नारा लगाया है। संत विनोबा जी का समस्त जीवन कर्मयोग में बीता व अपने देशवासियों को सभी तरह सुखी बनाने में प्रयासरत हैं। भूदान, ग्रामदान, जीवन दान एवं श्रम दान आदि यज्ञों में वे सक्रिय रहे हैं। संत विनोबा भावे जी ने देश के कोने–कोने में पदयात्रा की है और अपने जीवन दर्शन को सफल बनाया है।

विनोबा जी ने भारतीय समाज में व्याप्त भीषण विषमता की स्थिति को सुधारने एवं वर्गहीन, शोषण हीन समाज की कल्पना को साकार करने के लिए, अपना समस्त जीवन उत्सर्ग कर दिया। विनोबा जी के कार्य व उनके साहित्य से पूरा देश भली भांति परिचित है। विनोबा जी के विज्ञान के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आत्मज्ञान का समन्वय दुनिया भर में फैल चुका था। विनोबा जी ने दीर्घ कालीन अध्ययन चिन्तन के प्रयोग करके दुनिया के भिन्न–भिन्न धर्म–ग्रन्थों के जो सार निकाले हैं वे उनके समस्त कार्यो के प्रत्यक्ष प्रमाण है। विनोबा जी के सभी काम दिलों को जोड़ने के एकमात्र उद्देश्य से प्रेरित है। इस प्रकार उनके समन्वय विचार को ही लोक भाषा में व्यक्त किया गया है। विनोबा जी एक संत महात्मा थे। उनका व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त निर्मल एवं पवित्र था। वे एक बाल ब्रह्मचारी एवं महान तपस्वी थे। वे सभी क्षेत्रों में भारत का कल्याण चाहते थे। भारतीय जनता के लिए विनोबा जी वंदनीय है। सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए उन्होंने नई तालीम का निर्माण किया है।

शोध की आवश्यकता

किसी भी देश की प्रगति के लिए राष्ट्रीय एकता की भावना होना आवश्यक है। इस भावना को विकसित करने में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान देती है। बच्चों मं इस चेतना का विकास करने के लिए परिवार स्कूल ओर समाज का स्थान महत्वपूर्ण है। इन सब में शिक्षा का स्थान सबसे उंचा है। शिक्षा द्वारा नागरिकों में ऐसी आदतों, अभिरूचियों और चारित्रिक गुणों का विकास करना है, जिससे वे अपने उत्तदायित्वों को निभा सकें और उनकी बुरी प्रवृतियों को रोक सकें जो राष्ट्रीयता और धर्म निरपेक्षता के लिए बाधक है। आज का मानव पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करता जा रहा है। जो मानवता का गला घोंट रही है। आज अपनी सुख–समृद्वि दूसरों की बलि देकर प्राप्त करना चाहता है। आज मानव जीवन में भ्रष्टाचार उनके जीवन का अंग बन गया है। हर क्षेत्र में देखा जाए तो भ्रष्टाचार ही व्याप्त है। आज मानव अपने हित के लिए दूसरे मानव की हत्या करने की इच्छा रखता है। जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार का चाहे कोई भी रूप हो उसका सम्बन्ध काम, क्रोध, मद, लोभ आदि विचारों से है। आज इन्हीं कारणों से सामाजिक जीवन–मूल्य, नैतिक अवधारणाएं संकट में पढ़ गयी हैं।

शिक्षा बालक के परिवार, समाज व विद्यालय, के अनुकूल होनी चाहिए। जिनके द्वारा वह उसकी रूचि व आवश्यकताओं को समझ सकेगा। तभी वह उचित प्रकार की शिक्षा को प्राप्त कर सकेगा। यह आवश्यक है राज्य द्वारा ऐसी शिक्षा संस्थान का निर्माण किया जाए जो शिक्षकों और अभिभावकों को एक दूसरे के निकट सम्पर्क में लायें। इस सम्पर्क द्वारा ही शिक्षकों को अपने छात्रों का पूर्ण ज्ञान हो सकेगा। इस शोध–कार्य में भारतीय आदर्श व नैतिक मूल्यों जिनका रवीन्द्र नाथ टैगोर जी और संत विनोबा भावे के शिक्षा–दर्शन में समावेश है। उनके विचारों का तार्किक एवं सूक्ष्म विवेचन किया गया है। यदि हम आने वाले नागरिकों में राष्ट्रीयता व नैतिक गुणों का विकास करना चाहते हैं तो हमें वर्तमान शिक्षा पद्धित में उनके नैतिक मूल्यों का समावेश करना होगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षाके उद्देश्यों का मानव जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले उद्देश्य को निर्धारित कर लेता है। उद्देश्य मनुष्य को उचित निर्णय और मूल्यांकन करने की क्षमता देता है। जिससे उसको एक निश्चित दिशा मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1. गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन का अध्ययन करना।
2. गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
3. संत विनोबा भावे के दर्शन का अध्ययन करना।
4. संत विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
5. गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर एंव संत विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का आधुनिक शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।
6. संत विनोबा भावे की नैतिक शिक्षा का अध्ययन करना।
7. गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर की नैतिक शिक्षा का अध्ययन करना।
8. संत विनोबा भावे के पाठ्यक्रम के विचारों का अध्ययन करना।
9. गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के पाठ्यक्रम के विचारों का अध्ययन करना।

परिसीमन

शोध द्वारा गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं सतं विनोबा भावे के दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिपेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। उपरोक्त अध्ययन केवल इन दोनो विचारकों तक सीमित रखा गया है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा भावे के दार्शनिक विचार

शिक्षा, दर्शन का गतिशील पहलू है। यह दार्शनिक विश्वास का सक्रिय पक्ष और जीवन के आदर्शों को प्राप्त करने का व्यावहारिक साधन है।'' रॉस के शब्दों में ''दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक में दूसरा निहित है। दर्शन जीवन का विचाारात्मक पक्ष है, शिक्षा क्रियात्मक पक्ष।'' विश्व के सभी महान शिक्षाशास्त्री महान दार्शनिक हुए हैं। प्रत्येक समय के दार्शनिक महान शिक्षक हुए हैं दर्शन और शिक्षा की पारस्परिक निर्भरता को अनेक विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है। प्राचीन भारत में ऋषियों व बौद्वों के मत होते थे। वे भी अपनी पाठशालाओं में शिक्षा देते थे क्योंकि उस समय बौद्ध मत ही शिक्षा के संस्थान होते थे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अमेरिका के जॉन डी.वी. ने शिक्षा की समस्याओं के विभिन्न स्व–आदर्श आयाम दिये। भारत में रवीन्द्र नाथ टैगोर, मौलाना आजाद, डॉ. राधा कृष्णन्, स्वामी दयानन्द, आदि ने शिक्षा पर अपने दर्शन का प्रभाव डाला।

रवीन्द्र नाथ टैगोर के दार्शनिक विचार

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने प्रत्येक बालक, शिक्षक, अभिभावक व माता–पिता को अपने जीवन में इस परम उज्ज्वल आदर्श को अपनाने पर बल दिया। भारतीय संस्कृति की रक्षा का उपाय वे इसी आदर्श को स्वीकार करने में मानते थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है ''मानव–जीवन का कल्याण और प्रगति इसी में है।''

सन् 1908 में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शांति–निकेतन के बच्चों के लिए एक ऐसा नाटक लिखा है, जिसमें जीवन की खुशियों का अक्षय स्त्रोत और निर्दोष आनन्द का सुदीर्घ उत्सव है। इसका शीर्षक है–'शारदोत्सव'। उनके लिखे अन्य नाटकों की भाांति ही यह भी खुले मंच पर अभिनीत किया गया, बल्कि इसकी प्रकृति बच्चों को इतनी पसंद आती है कि आज भी इसका शांति–निकेतन में मंचन होता रहता है। इसके बाद उन्होंने 'प्रायश्चित' लिखा, जो अपनी विषय–वस्तु और मनोदशा में पिछले नाटकों से पूरी तरह भिन्न है।

इन कृतियों के साथ–साथ उनमें विश्व–बंधुत्व की भावना भी समानांतर रूप से चल रही थी। वे हिंदू, मुस्लिम और ईसाई धर्मो की समीओं का अंत करके एक धर्म जिसे वे 'भारतीय' कहते थे, उसमें समाहित हो जाना चाहते थे। उनके ये उद्‌गार उनकी कृतियों में हमेशा ही प्रकट होते रहे।

अब कवि–गुरू के गीतों में एकांतिक प्रेम की पुकार के स्थान पर वैश्विक प्रेम के प्रसून खिलने लगे थे। उनकी चंचलता में गंभीरता छाने लगी थी। 1909 से 1910 के दौरान उन्होंने इसी प्रकार के गीतों की रचना की और लगभग 157 गीतों का एक संकलन 'गीतांजति' के नाम से प्रकाशित हुआ। बहुत साधारण भाषा में लिखे गए, अपने अंदर उदात्त विचार और गंभीर भाव समेटे हुए ये गीत कवि की निर्मल–पावन भावाभिव्यक्ति का सच्चा दपर्ण हैं।

उन्होंने कहा है कि सर्वांगीण विकसित व्यक्तित्व के लिए एवं आदर्श नागरिकों के निर्माण के लिए यह परम आवश्यक है कि अपने देश में हम गुरू–गुरू–प्रणाली अर्थात गुरूकुल की शिक्षा पद्धति को प्रमुखता प्रदान करें। इस पवित्र आदर्श को आधार मानकार ही आर्य समाज द्वारा हरिद्वार मे गुरूकुल की स्थापना की गई। रवीन्द्र नाथ टैगोर इस प्रणाली को ही भारतीय समाज का आदर्श मानते थे। गुरूकुल जीवन अत्यन्त सरल और धार्मिक होता था। विद्यार्थी भूमि या काठ पर सोते थे। उनके वस्त्र व भोजन साधारण थे। परन्तु दिनचर्या बहुत नियमित एवं साधारण हुआ करती थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गुरूकुलों में विद्या अध्ययन तथा नियमित दिनचर्या के फलस्वरूप उनमें उत्तरदायित्व की प्रबल भावना होती थी।

रवीन्द्र नाथ टैगोरके शैक्षिक दर्शन

रवीन्द्र नाथ टैगोर समाज–सुधारक और राष्ट्र भाषा ''हिन्दी'' के प्रचारक के रूप में अधिक प्रचलित हैं इन सब कार्यों के लिए उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये थे। और इसी कारण वे शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे अपनी भारतीय पद्धति से ही जाने वाली शिक्षा के समर्थक थे। उन्होंने अंग्रेजी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का विरोध किया है और प्राचीन परम्परानुसार वेद, उपनिषद और स्मृतियों की शिक्षा पर बल दिया। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षा के महत्व को जीवन के प्रत्येक पहलू में वर्णित किया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बालिकाओं की शिक्षा को आवश्यक बतलाया है। स्वामी जी ने कहा है कि माँ प्रथम शिक्षिका होती है। उन्होंने अथर्ववेद का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि बालिकाओं को भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए शिक्षा की उपलब्धि करनी चाहिए। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी का विद्या से यह तात्पर्य था कि मानव में अच्छे बुरे का ज्ञान जागृत हो तथा उसे जीवन में नैतिक मूल्यों व आदर्शों का महत्व पता चले। मनुष्य में मानवता उत्पन्न हो और मानव धर्म को ही वे अपना सर्वप्रथम धर्म माने। इसी प्रकार अविद्या से रवीन्द्र नाथ टैगोर का तात्पर्य वैदिक व भ्रान्तियों से था। उनके अनुसार अविद्या वही है जिसमें मानव को सही झलक का ज्ञान न हो तथा उनके जीवन में जीवन मल्यों का कोई महत्व न हो। इस प्रकार रवीन्द्र नाथ टैगोर शिक्षा की परिभाषा में काफी व्यापक अर्थ देते हैं।

उनके अनुसार शिक्षा कार्य केवल पुस्तकों का अध्ययन मात्र नहीं है बल्कि शिक्षा का कार्य मानव को सम्पूर्ण मानव बनाना है, उसका पूर्णतया विकास करना ही शिक्षा का प्रथम कार्य है। अतः रवीन्द्र नाथ टैगोर में शिक्षा के द्वारा समाज में फैली कुरीतियों का बहिष्कार किया समाज में शिक्षा द्वारा एक ऐसे ज्ञान का प्रकाश किया जिससे पूरा समाज एक नयी विचारधारा से उज्वलित हो गया। स्वामी दयानन्द के अनुसार पाप से अज्ञान उत्पन्न होता है और वही अज्ञान आत्मा को लौकिक बंधनों में बांधे रखता है। अज्ञानतावश मानव सत्य को नहीं पहचान पाता और अनुचित कर्म करने लगता है। मूर्ति पूजा भी इसी अज्ञानता पर आधारित है दयानन्द ने स्वर्ग और नरक को भोग करना स्वर्ग है और लेकिन यातनाओं के द्वारा परिपीड़ित होना ही नरक है। वे आत्मा के दुःख और यातनाओं के बंधन से मुक्त हो जाने को ही मोक्ष मानते थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार–दर्शन का आधार चार वेद हैं। इनको वे ब्रह्म वाक्त मानते थे। इनके अतिरिक्त वे किसी और आधार को विश्वसनीय नहीं समझते थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार धर्म–मन, वचन और कर्म से सत्य और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

न्याय का पालन करना होता है। धर्म के अन्तर्गत उन्होंने भक्ति को भी महत्व प्रदान किया। उनके अनुसार ईश्वर–भक्ति के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है। किन्तु साथ ही इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उचित कर्म, सत्य ज्ञान, ब्रहमचार्य का पालन सत्य–संगति आवश्यक है। उन्होंने गुणवान पुरूषों के सहवास को अत्यन्त महत्वपूर्ण बतलाया, जोकि अन्य महान भारतीय महापुरूषों ने भी सदैव माना है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने शिक्षा से अपने समाज सुधार कार्यों व शैक्षिक विचारों से जन, साधारण में एक ऐसी चेतना का प्रवाह किया है कि जोकि वास्तव में अत्तुलनीय एवं प्रशंसनीय है।

संत विनोबा भावे के दार्शनिक विचार

संत विनोबा जी विश्वबन्धुत्व में विश्वास रखते हैं ओर प्राणीमात्र का कल्याण चाहते हैं। वे सर्वोदय अर्थात् सबके उदय, सबका विकास हो, हित के सिद्वान्त के पोषक हैं। सर्वोदय का लक्ष्य है ऐसा समाज जो प्रेम, सद्भावना तथा अहिंसा के आधार पर ही स्थापित हो सकेगा। विनोबा जी ने शिक्षा में 'नई तालीम' की रूपरेखा प्रस्तुत की। नई तालीम सर्वोदय की शिक्षा है। उनके विचारानुसार नई तालीम द्वारा एक नया समाज बनेया, जिसमें प्रत्येक नया समाज पुराना पड़ता जायेगा। नई तालीम का अर्थ नित्य नये समाज की रचना करने वाली शिक्षा है। नई तालीम जीवन के सम्पूर्ण दृष्टिकोण बदल देगी। इसका प्रमुख उद्देश्य वर्गहीन, अहिंसात्मक सामाजिक वातावरण का निर्माण करना है। संत विनोबा भावे के अनुसार शिक्षा ही वह शक्ति हैं जिसके द्वारा स्वतत्रं एवं विचारशील व्यक्ति उत्पन्न होंगे शिक्षा ही वह कुंजी है, जिसके द्वारा हमारी विचारधारा निर्मित होती है। उसका पुष्टिकरण से समर्थन होता है कि नई तालीम की नवीनता इसी में हे कि वह एक नये समाज का, जो वर्गरहित हो। जो प्रेम न्याय, सत्य ओर सहयोग के उच्च आदर्शों पर स्थित हो। जिसके सदस्य सामूहिक कल्याण की ओर अग्रसर हो, निर्माण चाहती है। विनोबा जी शिक्षा को बालक के हृदय पेट व मस्तिष्क की शिक्षा मानते हैं। हृदय की नई तालीम सहानुभूति, विश्व–प्रेम और अन्य चरित्रक गुणों की विधार्त्री है मस्तिष्क के लिए वह कुशाग्र वृद्वि की निर्मात्री है। यहां पेट की भूख के लिए स्वस्थ विधान है। उपर्युक्त से आशय है कि नई तालीम में विनय एवं मानवता की भी अनोखी पुट है। हसतकला व भाषणकला का उचित समन्वय तथा ज्ञान एवं क्रम की अखण्ड ज्योति का प्रकाश है। इस प्रकार शिक्षा अपने आप में पूर्ण एवं अखण्ड शक्ति का कार्य करते है। तथा दूसरों का हित चाहती है, और अपने–आप समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करती है। विनोबा जी के कथनानुसार ''देश शक्ति ईश्वरशक्ति है।'' ईश्वर भजन उसके साथ होना चाहिए। हमारी शिक्षा उस समय तक अधूरी है जब तक उसके द्वारा हमारी आध्यात्मिक चारित्रिक ओर नैतिक उन्नति नहीं होगी। विनोबा जी शिक्षा में 'समवाद' चाहते हैं। समवाय के आधार पर ज्ञान और कर्म के सुत्रों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को इस प्रकार पिरोया जाये कि वे एक दूसरे के पूरक बन जाये। विनोबा जी समन्वय पर बहुत बल देते हैं। संत विनोबा भावे के कथनानुसार–शिक्षा समाज में बहुचर्चित विषय है। शिक्षा से विकृत होकर ही सीख–बना है। जीवन में शिक्षा का अद्वितीय महत्व है। शिक्षा समय के प्रभाव से अपने विभिन्न मत–मतांतर प्रस्तुत करती रही है। शिक्षा क्षेत्र में सदैव अनुसंधान होते रहे हैं। विनोबा जी शिक्षा का आधार मातृभाषा को स्वीकार करते हैं। वे अंग्रेजी का बहिष्कार चाहते हैं। मातृभाषा द्वारा प्रदात ज्ञानस्थायी एवं ठोस होता है। इस स्थल पर मातृभाषा के संबध में यह जान लेना आवश्यक है कि बालकों के विकास में किस सीमा तक इसकी महत्ता है। तभी इसके संरक्षण एवं प्रसार में अन्य भागों में भी अपनी मातृभाषा के लिए व्यक्ति सजग होंगे। विनोबा जी गीता के कार्ययोग में विश्वास करते हैं। उनके अनुसार कर्तव्य परायण व्यक्ति ही अपने उत्तरदायित्व को संभाल सकता है। और कर्तव्य परयण होना अपने आप में एक बहुत बड़ा सामाजिक गुण है। कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति स्वतः समाज सेवी एवं कर्मयोगी है।

विनोबा जी चाहते थे कि उनके देशवासी कर्म योगी बने। उनका कहना है कि विद्यार्थियों को उनकी प्रारम्भिक अवस्था से ही कर्मयोग के दर्शन परिचित कराया जाए। अतः अध्ययन में कर्मयोग को अवश्य स्थान मिले। विनोबा जी का कहना था कि भारत में निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। अनिवार्य शिक्षा को कार्य स्यरूप में देना चाहिए। शिक्षा का मुख्य आधार बुनियादी शिक्षा होनी चाहिए। विनोबा जी वैदिक प्रणाली पर आधारित गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की मान्यतायें स्वीकार करते हैं वे भारतीय गुरूकुल के आदर्श को विद्यार्थी जीवन में अनिवार्य देखना चाहते है। अतः इस प्रकार से विनोबा जी के गुरूकुल जीवन से स्पष्ट है कि वहां जीवन उच्च एवं आदर्श था शिक्षा के प्रति वे निष्ठानाव थे। विनोबा जी गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को मानव की समस्त मानसिक, चरित्रिक एवं नैतिक गुणों का सम्पूर्ण विकास मानते है। विनोबा जी ने विश्व मानव धारणा के प्रादुभूंतिकरण के लिए बालकों को आध्यात्मिक शिक्षा देने का पक्ष दिया है। आधुनिक शिक्षा से ही उनकी संर्कीण विचारधाराओं का परिशोधन होगा। वे चाहते हैं कि वे विद्यार्थियों को ब्रहमज्ञान हो, अतः उन्होंने अपनी शिक्षा में ईश्वर की अराधना में चिन्तन का विधान किया है।

संत विनोबा जी का सर्वोदय दर्शन

संत विनोबा भावे जी विश्वबन्धुत्व में विश्वास रखते थे। वे सबके उदय, विकास एवं सबके हित के पोषक थे। विनोबा जी ने अंहिसा एवं सत्य के आधार पर स्थापित वर्ग विहीन, जातिविहीन एवं शोषणविहीन समाज की स्थापना की जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति का पर्याप्त अवसर मिल सके। सर्वोदय का लक्ष्य है ऐसा समाज जो प्रेम, सद्भावना तथा अंहिसा के आधार पर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थापित हो। विनोबा जी का जीवन दर्शन भी सर्वोदय समाज की स्थापना करना था, विनोबा जी के विचारों में सत्य, अंहिसा एवं प्रेम मानव हृद्य परिवर्तन की भावना अन्तनिर्हित थी। संत विनोबा जी अनुसार ब्रह्मविद्या भारतीय ज्ञान की सर्वश्रेष्ठ देन है। इससे आशय है कि हम सब आत्म रूप है। हम सब एक ही आत्मा है और आत्मा की एकता पर वह विद्या आधारित है। ब्रह्मविद्या के बिना हमारा कोई भी काम आगे नहीं बढ़ सकता है।

गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं संत विनोबा भावे के शैक्षिक–विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

रवीन्द्र नाथ टैगोर वेदों के ज्ञाता, गूढ़ शिक्षा शास्त्र महान दर्शनिक व प्रबल समाज सुधारक थे। वे ईश्वरवादी तो थे। लेकिन मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते थे। विनोबा जी विश्वबन्धुत्व में विश्वास रखते थे और प्राणीमात्र का कल्याण चाहते थे। वे 'सर्वोदय' अर्थात सबका उदय एवं हित चाहते थे।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने धार्मिक अन्धविश्वासों को जड़ मूल से समाप्त करने का बीड़ा उठाया और देश के कौने–कौने तक अपनी आवाज पहुँचाई संत विनोबा भावे ने अंहिसा एवं सत्य के आधार पर स्थापित, वर्गहीन, जातिविहीन, शोषण विहीन जैसे समाज की स्थापना की जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति का प्राप्त अवसर मिले, यही उनका सर्वोदय का लक्ष्य था।

रवीन्द्र नाथ टैगोर सच्चे मायने में भारतीय थे इसलिए उन्होंने भारतीय शिक्षा को पुनः भारतीय बनाने का प्रयास किया। विनोबा जी भारतीय समाज की पुनजागृति समर्थक थे। उन्होंने सबकी भलाई के लिए सर्वोदय धारा प्रवाहित की।

विचारों में समानता

शिक्षा के उद्देश्यों में समानता

रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा संत विनोबा भावे दोनों ही मानव का कल्याण चाहते थे, तथा शिष्य द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को स्वाबलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे, शिक्षा मनुष्य को उच्च स्तर तक पहुँचाने का कार्य करती है।

सामाजिक विचारों में समानता

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने भारतीय समाज में अनेक व्याप्त कुरीतियों का अन्त करने के प्रयास किया। जैसे स्त्री प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बिरादरी के बन्धन, समुद्र यात्रा निषेध तथा जाति विद्रोह आदि, दयानन्द ने इन सबका खुलकर बहिष्कार किया तथा स्वदेशी राज्य का प्रसार किया, विनोबा जी ने समाज में सत्य अंहिसा के आधार पर स्थापित वर्गहीन, शोषण विहीन, जाति विहीन जैसे समाज की स्थापना की है जिसमें प्रत्येक मानव को अपनी उन्नति का अवसर मिलें। विनोबा जी ने ऐसे समाज को प्रेम सद्भावना तथा अंहिसा के आधार पर ही स्थापित किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धार्मिक विचारों में समानता

रवीन्द्र नाथ टैगोर में अनेक पारम्परिक धारणाओं का खण्डन किया, उन्होंने मूर्ति पूजा का खुलकर विरोध किया। परस्पर द्वेष, भेद भाव को दूर किया। धार्मिक विरोध को दूर करके देश का कल्याण किया। विनोबा भावे ने भी नयी तालिम में इसी बात पर जोर दिया है कि एक नया समाज हो जो वर्गरहित हो तथा उच्च आदर्शो पर अग्रसर हो।

मातृ भाषा के समर्थक

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी मातृभाषा के समर्थक थे। उनके अनुसार एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित होना असम्भव है। उन्होंने विदेशी भाषा का विद्रोह किया उनके अनुसार शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिए। विनोबा जी भी शिक्षा का आधार चाहते है। उनके अनुसार मातृभाषा द्वारा प्रदत ज्ञान स्थायी एवं ठोस होता है। विनोबा जी कहते है कि इस स्थल पर मातृभाषा के सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक कि बालकों के विकास में यह किस सीमा तक महत्त्व है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार

रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। आज के व्यावहारिक युग में यह सिद्धान्त आमानवीय सा लगता है लेकिन इसके पश्चात शिक्षा को भारतीय रूप देने के लिए वे सदा स्मरणीय रहेंगे।

विनोबा जी के अनुसार छात्र एवं विद्यार्थी दोनों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। विनोबा ने कहा है बच्चा जन्म से लेकर अपनी माता से जो भाषा ग्रहण करता है। वही उसकी मातृभाषा हो जाती है। विनोबा के विचारानुसार मातृभाषा प्रत्येक व्यक्ति के लिए वेदनीय है। बालक इस भाषा के द्वारा अपने मनोभावों को दूसरों तक पहुँचाता है। अतः यही कारण है मातृभाषा के द्वारा व्यक्ति का उचित विकास होता है।

चरित्र निर्माण के मुख्य उद्देश्य में समानता

रवीन्द्र नाथ टैगोर शिक्षा को ज्ञान के समकक्ष मानते थे। तथा शिक्षा को उन्होंने मुक्ति का अंतिम उद्देश्य माना है। उन्होंने मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और व्यावसायिक सभी प्रकार के विकास पर बल दिया है। विनोबा जी के अनुसार मनुष्य के चारित्रिक गुणों द्वारा मनुष्य का विकास सम्भव है। उन्होंने अपनी तालीम में कहा है हृद्य के लिए नयी तालीम, सहानुभूति विश्व प्रेम एवं चरित्रिक गुणों की विद्यात्री है। मस्तिष्क के लिए वह कुशाग्र बुद्धि का है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विश्व मानव की धारणा में समानता

रवीन्द्र नाथ टैगोर सच्चे अर्थ में आदर्शवादी थे, जीवन का प्रत्येक पहलू उनका एक उचित आदर्श था। वे समस्त भारतीय जनता का कल्याण चाहते थे। विनोबा जी का जीवन दर्शन है सर्वोदय। वे सबका उदय एवं कल्याण एवं उदय चाहते थे। अतः उनकी धारणा है शिक्षा का लक्ष्य इस प्रकार से विकास करना है कि वह विश्व मानव अर्थात सार्वभौम सत्य से तादाम्य करके आत्म साक्षात्कार करे।

असमानताएं

उपरोक्त विवेचन से दोनों ही दार्शनिकों में समानता है परन्तु इनके विचारों में बहुत सी असमानताओं के साथ असमानतायें भी है जो निम्न है –

लक्ष्यां में विभिन्नता

रवीन्द्र नाथ टैगोर भारतीय समाज की अलौकिक विभूति थे। वे स्त्री पुरूष तथा प्रत्येक वर्ग के बालकों के लिए शिक्षा आवश्यक मानते थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने यह सत्य को स्वीकार किया है कि किसी देश की उन्नति तब तक नहीं हो सकती जब तक वहां के भावी नागरिकों को पूर्णतः सुशिक्षित नहीं किया जायेगा। विनोबा भावे जी ने शिक्षा का लक्ष्य एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए माना है। उन्हें कहा है सर्वोदय समाज की स्थापना तभी होगी जब हम सच्चे अर्थ में शिक्षित होगें। शिक्षा ही सच्चे मानव एवं आदर्श समाज की स्थापना का कार्य करती है।

तार्किक संस्कृति के आधार पर असमानता

रवीन्द्र नाथ टैगोर भारतीय संस्कृति के पूर्ण पोषक थे। उन्हें प्राचीन भारतीय आदर्श सर्वधा मान्य था। उन्होंने भारतीय मान्यताओं को अपनाने में ऋषियों, मुनियों एवं अपने पूर्व पुरूषों द्वारा प्रतिपादित समर्थन में ही वे भारतीय जनता का कल्याण चाहते थे। विनोबा जी का सर्वोदय सिद्धान्त अति प्राचीन हैं। उन्होंने कहा है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों का यह मंगलमय जीवन दर्शन शाश्वत सत्य है कि वे उच्च आदर्श के थे। वे समस्त जनता का कल्याण चाहते थे।

शिक्षा के आधार पर विभिन्नता

रवीन्द्र नाथ टैगोर का वैदिक दर्शन उनकी शिक्षा का आधार है। उनके दर्शन का आधार चार वेद हैं। इनको वृद्धावाक्य मानते थे। इनके अलावा वे किसी और आधार को विश्वसनीय नहीं समझते थे। विनोबा जी विश्वबन्धुत्व में विश्वास रखते थे। उनकी शिक्षा का मुख्य आधार सर्वोदय था।

आध्यात्मिक शिक्षा के आधार पर विभिन्नता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रवीन्द्र नाथ टैगोर इस भौतिक संसार की यर्थाथता स्वीकार करते हैं। उनका कहना था कि मानव अपने कर्मो के अनुसार फल भोगता है। मानव अपने कर्मो के अनुसार दूसरा जीवन प्राप्त करता है। जबकि विनोबा जी बालकों को अध्यात्मिक शिक्षा देने के पक्ष में हैं वे कहते है। अध्यात्मिक शिक्षा से ही उनकी सकीर्ण विचार धाराओं का परिशोधन होगा। वे चाहते हैं कि विद्यार्थियों का ब्रह्म ज्ञान हो, अतः उन्होंने अपनी शिक्षा में ईश्वर की अराधना चिंतन का विधान किया है।

ज्ञान एवं कर्म में विभिन्नता

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने कहा है कि मानव अपने कर्मा के अनुसार ही दूसरा जीवन प्राप्त करता है और वह उस जीवन में उन कर्मा का फल भोगता है जिन कार्यो को मनुष्य जीवन रहते करता है। अतः टैगोर जी कहते हैं कि मनुष्य को पहले वस्तु जगत का ज्ञान कराना चाहिए। विनोबा जी ने ज्ञान एवं कर्म को स्वयं कार्य करने से फल मिलता है वह ज्ञान है। श्रम के प्रति उनकी आस्था सजग थी। वे इसी विचार के पोषक थे, वे उद्योग द्वारा ज्ञान देना चाहते थे। विनोबा जी उद्योग द्वारा ज्ञान ही जीवनोपयोगी मानते थे।

शिक्षा के उद्देश्यों में विभिन्नता

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को विकसित करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानते है। स्वामी रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के अनुसार शिक्षा वह साधन है, जिसके द्वारा मानव सम्पूर्ण रूप से विकसित होता है। विनोबा जी अपनी नई तालीम के उद्देश्य निर्धारित करते है। उनकी दृष्टि से शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव में ज्ञान एवं अभिरूचि उत्पन्न करना है। विनोबा जी अपनी नई तालीम द्वारा इस मार्ग को प्रशस्त करना चाहते है और भारतवासियों में ज्ञानार्जन अनुसंधान एवं खोज की अभिरूचि उत्पन्न करना चाहते है।

विचारों में विभिन्नता

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी सादा जीवन उच्च विचारों को अपनाते थे और प्रत्येक बालक, शिक्षक, अभिभावक, माता–पिता को भी अपने जीवन में इस परम उज्जवल आदर्श को अपनाने पर बल देते थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी सादा जीवन उच्च विचार शिक्षा का आदर्श मानते थे। विनोबा जी के विचार अति प्राचीन हैं उन्होंने सर्वोदय तीर्थ की भावना व्यक्त की थी ''सर्व भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामचः सर्वे भडाणु पश्यन्तु मा कश्चित दुख भागवेत'' विनोबा जी समस्त जगत का कल्याण शिक्षा का आदर्श मानते थे।

गुरूकुल जीवन शिक्षा प्रणाली में विभिन्नता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी प्राचीन भारत में प्रचलित गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के आदर्श को अपनाने पर बल देते थे। शिक्षा–प्रणाली के आदर्श को अपनाने पर बल देते थे। शिक्षा–प्रणाली के कार्य में उन्होंने गुरूकुल शिक्षा–प्रणाली को आदर्श को सर्वश्रेष्ठ माना है। रवीन्द्र नाथ टैगोर का निश्चित विचार था गुरू गृह प्रणाली के द्वारा ही आदर्श शिक्षा सम्भव है। वे चाहते थे। इस प्रणाली का प्रसार हो उन्होंने गुरूकुल प्रणाली को मनुष्य के सर्वांगीण विकास के निर्माण के लिए परम आवश्यक माना है।

विनोबा जी वैदिक प्रणाली पर आधारित गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की मान्यताओं को स्वीकार करते है। प्राचीन भारतीय गुरूकुल के आदर्शों को वे विद्यार्थी वर्ग के जीवन में चरितार्थ देखना चाहते थे। विनोबा जी विद्यालय का रूप भी गुरूकुल जैसे बनाना चाहते थे। जहां शिक्षक एवं विद्यार्थी एक साथ रहकर जीवन यापन करें।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने धार्मिक और नैतिक जीवन पर बल देते हुए कहा है कि धार्मिक जीवन के कारण उनका दृष्टिकोण सर्वथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक होता था। अतः शिक्षा का उद्देश्य भी धर्म से पूर्ण प्रवाहित होता था। स्वामी जी कहते है कि गुरूकुल शांत, व एकान्त स्थानों पर होते थे जहां पर बैठकर विद्यार्थी विद्योपार्जन करते थे। विद्यार्थियों के अन्दर धार्मिक प्रवृति को जागृत करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था।

विनोबा जी के अनुसार गुरूकुल जीवन अत्यन्त सरल था। गुरूकुल में विद्यार्थी जमीन पर सोते थे। साधारण भोजन करते थे और अपने गुरू की अवधानता में रहकर विद्योपार्जन करते थे। विनोबा जी बालकों के ब्रह्मचारी कर्तव्य निभाने पर बल देते हैं। वे कहते है सांसरिक माया मोह से दूर रहकर ही विद्यार्थी जिज्ञासु भाव से विद्योपार्जन कर सकते है। इससे बालकों के शारीरिक, मानसिक, एवं आध्यात्मिक शक्तियों एवं विकास होता था और वे समस्त गुणों से विभूषित होते है।

व्यावसायिक शिक्षा में विभिन्नता

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने मानव के कल्याण के लिए शिल्पकला शिक्षा पर विशेष बल दिया। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी चाहते थे कि देशवासियों को अच्छी से अच्छी शिल्पकला से सम्बन्धित शिक्षा प्राप्त हो ताकि वे अपनी रोजी रोटी कमा सके।

विनोबा जी ने 'समवाय' को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य माना है। उन्होंने कहा है 'समवाय' से हमारा वह उद्देश्य पूरा हो जाता है जो हमारी शिक्षा का मुख्य आधार है। विनोबा में 'समवाय' के लिए शाला के आस–पास का वातावरण एवं वहां के लोगों का घरेलू उद्योग–धन्धों आदि का ध्यान रखकर समवाय को आधार बनाया तथा उद्योग को चुना विनोबा जी ने कहा कुटीर व उद्योग धन्धा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऐसा हो जो हर मौसम में चलाया जा सके है तथा उससे सम्बन्धित कच्चा माल वहां सरलता से मिल सके।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के शैक्षिक विचारों का आधुनिक समाज में योगदान

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी सच्चे मायने में आदर्शवादी थे। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रयोग किया। उन्होंने शैक्षिक, धार्मिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं नैतिकता की दृष्टि से व्यक्ति के जीवन में व्यावहारिक पक्ष को महत्व दिया। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी का सबसे बड़ा योगदान है, हिन्दू समाज को सशक्त और सप्रमाण बनाना। विदेशी आक्रमण से बंधी हुई जनता को उन्होंने पुर्नजागरण की शक्ति का संदेश दिया, वर्तमान भारत में शक्तिवाद का जो अखण्ड प्रचार रवीन्द्र नाथ टैगोर ने किया वैसा अन्य किसी ने नहीं किया। छूआछात के छाप से हिन्दू जाति को मुक्त करने में उनका बड़ा योगदान रहा है। छूआछात को उन्होंने वेद विरूद्ध माना।

शिक्षा का रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने व्यापक प्रसार किया, उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया है और स्त्रियों को भारतीय हिन्दू समाज में पूज्य माना है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर में स्वदेश प्रेम पर्याप्त मात्रा में था उन्होंने मातृभाषा पर विशेष बल दिया। वे जनजागरण के अग्रदूत थे। उनमें सामाजिक, नैतिक और लौकिकता की सर्वाधिक क्षमता थी। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने एक राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक तथा एक चिन्तनशील शैक्षिक कार्यकर्ता के रूप में अपना जीवन सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ बिताया। आर्थिक क्षेत्र में भी उन्होंने कड़े कदम उठाये। उन्होंने बालकों के लिए प्राथमिक स्तर तक की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। अतः इस प्रकार से उन्होने ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया। इसके लिए उन्होंने विद्यार्थी जीवन में शिष्य कल्प के विकास पर बल दिया। वे चाहते थे कि देशवासियों को अच्छी से अच्छी शिल्पकला से सम्बन्धित शिक्षा प्राप्त हो सके ताकि वे अपनी रोजी–रोटी कमा सके। आधुनिक शिक्षा में भी व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जिस युग के प्रवर्तक थे। उस समय भारतीय समाज में अनेक कुरीतियों ने अपना स्थायित्व जमाया हुआ था। स्त्री प्रथा, बाल–विवाह, बिरादरी के बन्धन आदि थे। गुरू जी ने इन सब कुरीतियों का खुलकर विरोध किया तथा स्वदेशी राज्य का प्रसार किया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने यहां धार्मिक एकता का पाठ देशवासियों को पढ़ाया वहीं दूसरी तरफ उन्होंने जाति–पाति व जाति प्रथा के दोषों से लोगों को परिचित कराया। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने मनोवैज्ञानिक आधार पर शिक्षा के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया जो कि आधुनिक शिक्षा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सिद्धान्तों द्वारा प्रमाणित है। उन्होने ने बालकों की सर्वागीण विकास पर बल दिया है उन्होंने सबसे पहले शिक्षा के आवश्यक सिद्धान्त को उद्घोषित किया कोई भी माता–पिता अपने बच्चों को घर की चार दीवारी के अन्दर बन्द करके न रखें प्रत्येक बालक को प्राथमिक शिक्षा तथा अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा देने का प्रावधान किया आज भी सरकार ने गरीब बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है उन्होंने शिक्षा के कार्यो में लगे लोगों को प्रोत्साहन दिया तथा जन शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण कार्य किया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने शिक्षा को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया है। इसके लिए उन्होंने विद्यार्थी जीवन में शिल्पकला के विकास पर बल दिया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के शैक्षिक–दर्शन में शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है उन्होंने भारतीय समाज में स्त्री को पूज्य माना है। जीवन के प्रत्येक क्रिया को सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, एवम् आध्यात्मिकता में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आधुनिक शिक्षा में भी स्त्री शिक्षा पर बल दिया है।

उन्होने समाज में फैली हुई धार्मिक भ्रान्तियों को दूर किया है तथा लोगों को ऐसा धर्म अपनाने की शिक्षा दी है जो जीवन के शाश्वत मूल्यों के अनुसार है तथा जो धर्म अन्य धर्मो का भी समान आदर करता हो। उन्होंने मानव धर्म को श्रेष्ठ धर्म बताया है। उन्होंने मानव हित पर राष्ट्र हित तथा राष्ट्र हित पर विश्व हित को महत्व दिया है। आधुनिक समाज में भी। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने जन साधारण में चेतना जगायी, तथा उन्हें बताया कि मूर्ति पूजा करना बिल्कुल अनुचित है। क्योंकि मूर्ति जड़ है उसे ईश्वर मानोगे तो ईश्वर भी जड़ सिद्ध होगा। इसलिए उस परम ब्रह्म की उपासना करो जो निराकार है तथा सब जगह एक साथ उपलब्ध है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के गहरे प्रवचनों द्वारा समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। लोगों की आस्था जागृति हुई उनकी बातों का सबने अमल किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जो भी उपदेश लोगों को दिये उससे मलिन एवं पतित लोगों का कल्याण हुआ।

उन्होंने प्रत्येक को बताया सच्चा त्याग वही है जिसमें घृणा का त्याग है अभियान का त्याग है। वह परम त्याग ईश्वर और प्रजा प्रेम से उत्पन्न होता है। भक्ति और प्रीति पुरूषार्थ और शुभ क्रिया के बिना नहीं होता है। आधुनिक शिक्षा में भी धर्म निरपेक्षता को महत्व दिया गया है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने भारतीय ज्ञान, धर्म, संस्कृति को अपने जिस वास्तविक रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। उसके कारण भारत का गौरव बड़ा और विश्व हिन्दू सभ्यता का नया अध्याय हुआ प्रारम्भ हुआ जिसका हमारे आधुनिक समाज में विशेष महत्व है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने बालकों के लिए अनिवार्य एवं शिक्षा व्यवस्था पर बल दिया है। शिक्षा को उन्होंने शिल्पकला के आधार पर दिये जाने का विचार दिया है उन्होंने कहा शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो स्वयं सहायता एवं आत्मनिर्भर बनाने वाली हो तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। उन्होंने स्थानीय रीति–रिवाजों, जीवन, मूल्यों एवं लोक अनुभवों को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक शिक्षा को महत्व दिया है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के द्वारा किये गये कार्यो का उद्देश्य एक ही था, वह था मानवता का विकास उन्होंने अपने प्रवचनों व भाषणों के द्वारा न केवल उपदेश दिये बल्कि पूरी जनता को समाज सुधार के कार्यो के लिए प्रेरित किया तथा जीवन में नैतिक मूल्यों व आदर्शो की स्थापना करने का भारतीयों को महान योगदान दिया है। जिसका आज भी हमारे समाज में गुणगान किया जाता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने विश्वन्धुत्व की भावना को विशेष बल दिया है विश्वबन्धुत्व से तात्पर्य है कि सभी राष्ट्र एक–दूसरे के प्रति भाई–चारे व प्रेम भावना रखे। उनकी शिक्षा का यह महान लक्ष्य आज की शिक्षा प्रणाली के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यदि सभी देश एक–दूसरे के प्रति सह भावना रखेगे तो एक–दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा की भावना समाप्त हो जायेगी। इसलिए आज भी विश्वबन्धुत्व की यह भावना जो रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने दी थी उसका आधुनिक समाज में बहुत महत्व है। उनकी इस भावना से विनाश से भी बचा जायेगा और विकास का क्षेत्र भी होगा।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने अपने जीवन में अनेक कविताओं की रचना की और मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रावधान किया। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा के लिए मातृभाषा पर बल दिया जिसके कारण उन्हें भावी शिक्षा में कठिनाई न हो आधुनिक शिक्षा में भी भाषाओं के अध्ययन पर महत्वपूर्ण जोर दिया जाता है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के शैक्षिक विचारों का विशेष महत्व है। उनके द्वारा प्रदत्त साहित्य आज भी देश में अनेक विद्यार्थियें को प्रेरित कर रहा है।

संत विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का आधुनिक समाज में योगदान

संत विनाबा भावे आधुनिक भारत के व्यावहारिक संत थे। जिन्होंने प्राणि मात्र का कल्याण चाहा वे सर्वोदय अर्थात सबके उदय, सबके विकास एवं सबके हित के पोषक हैं। उन्होंने आत्मज्ञान, आत्मनिर्भता, साहस, एकाग्रता, ब्रह्मचर्य, नारी शिक्षा एवं जनता की शिक्षा पर बल दिया, विनोबा जी ने नारी की शिक्षा पर विशेष बल दिया तथा उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा का महत्व दिया आधुनिक शिक्षा में भी भाषाओं के अध्ययन पर महत्वपूर्ण जोर दिया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विनोबा जी ने तत्कालिक शिक्षा पद्धति की आलोचना की। उन्होंने वास्तविक शिक्षा पर बल दिया। जो शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाते हुए समाज का महत्वपूर्ण अंग बन जाय विनोबा जी ने पाठ्यक्रम को महत्व दिया है। जोकि आधुनिक समाज में शिक्षा का एक आधार है। उनके पाठ्यक्रम में सौन्दर्य पक्ष तथा उद्योग पक्ष दोनों पहलुओं का समन्वय परिलक्षित होता है तथा इसका उद्देदश्य बालक को स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर रूचि उत्पन्न करना, स्वतंत्र एवं विचाराशील व्यक्ति का निर्माण करना, तथा विश्व मानव की धारणा का विकास करना है।

विश्वमानव की धारणा की आधुनिक शिक्षा में मुख्य उद्देश्य माना है उन्होंने इतिहास, भूगोल के अध्ययन पर बल दिया है। उन्होंने पाठ्यक्रम में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के अतिरिक्त व्यावहारिक, व्यावसायिक, एवं शारीरिक शिक्षा का भी प्रावधान किया। विनोबा जी ने बाल केन्द्रित शिक्षा का सर्मथन किया। उन्होंने भारत में अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया और वर्तमान में भी बालक की स्वतंत्रता का सर्मथन किया गया है।

विनोबा जी ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिल्पकला, चित्रकला व छोटे–छोटे लघु उद्योगों की शिक्षा पर बल दिया जो आधुनिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी विभिन्न आयोगों के सुझाव रखे गये है।

विनोबा जी ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक स्त्री शिक्षा क ओर ध्यान दे तो एक महान परिवर्तन दिखायी देता है। स्वतंत्रता के बाद भारत में नारी की सामाजिक स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं उनके सम्बन्ध में पुरूषों के विचार बदल रहे हैं और उनकी मान्यताओं में भी अन्तर आ रहा है। विनोबा जी ने विभिन्न कलाओं की शिक्षा महिलाओं को देने पर जोर दिया। वे स्त्रियों को व्यवसायिक शिक्षा देने के पक्ष में थे। वर्तमान समय में भी स्त्रियों को सभी प्रकार की शिक्षा देने का प्रावधान किया जा रहा है।

विनोबा जी ने बुनियादी शिक्षा को विशेष महत्व दिया है उन्होंने बुनियादी शिक्षा में कागज का उद्योग, खिलौने बनाना सब्जीबाड़ी करना, तकनीकी ढंग से खेती करना। चमड़े का उद्योग, लकड़ी का उद्योग आदि सभी प्रकार की बुनियादी शिक्षा को जोर दिया है जिसका हमारे आधुनिक भारत में काफी महत्व है। विनोबा जी ने मातृभाषा को विशेष महत्व दिया है उन्होंने शिक्षा का आधार मातृभाषा को स्वीकार किया है मातृभाषा द्वारा प्रदत ज्ञान स्थायी एवं ठोस होता है उन्होंने हिन्दी को मातृभाषा का स्थान दिया है मातृभाषा हमारी राष्ट्रभाषा भी है राष्ट्रभाषा और मातृभाषा दोनों दृष्टियों से इनकी व्यापक महता है।

विनोबा जी ने सत्य एवं अंहिसा के आधार पर स्थापित वर्गहीन, शोषणहीन, जातिहीन जैसे समाज की स्थापना की। जिसमें प्रत्येक को अपनी उन्नति का पर्याप्त अवसर मिले। उन्होंने सर्वोदय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

द्वारा प्रेम, सद्भावना तथा अंहिसा के आधार पर स्थापित किया। उनका सर्वोदय का अर्थ मानव मात्र के हितार्थ विचारने वाला एक पवित्र सिद्धान्त है।

विनोबा जी ने स्नेह एवं श्रद्धा पर आधारित अनुशासन को स्थाई बताया। वर्तमान समय में भी अनुशासन को महत्व दिया गया है उन्होंने शिक्षा में अनुशासन को विनय का स्थान दिया है विनय, नम्रता का द्योतक है कठोरता का नहीं, कठोरता में रहना अनुशासन का गुण है जिसका आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान है।

विनोबा जी ने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया इसके लिए विद्यार्थी जीवन में कताई, बुनाई, कढ़ाई का काम करना, बनाई का काम करना आदि पर बल दिया आज भी शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आधुनिक शिक्षा का मुख्य आधार बनाया गया है। विनोबा जी के शैक्षिक विचारों में समवाय को विशेष महत्व दिया गया है। समवाय द्वारा हमारा वह उद्देश्य पूरा हो जाता है जो हमारी शिक्षा का है। समवाय शिक्षा को पूर्ण बनाता है तथा मनुष्य का सर्वागीण विकास करता है। समवाय का तात्पर्य 'उद्योग शिक्षण' से लिया गया है इसके द्वारा बच्चे की सभी शक्तियों का पूर्ण विकास किया गया है बच्चे के जीवनोपयोगी अजीविका का साधन प्राप्त कर देना इस उद्देश्य का महत्व है। आधुनिक शिक्षा में भी उद्योग शिक्षण को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम व विधियों का निर्माण किया गया है।

विनोबा जी ने शिक्षा के लिए शिक्षक और शिक्षार्थी को आवश्यक माना हैं इन दोनों के बीच होने वाली अन्तः क्रिया को शिक्षा का रूप दिया है जो वर्तमान समय में भी लागू होता है। आज भी शिक्षा की यह उपयोगिता व्यक्ति एवं समाज दोनों के ही सन्दर्भ में है।

विनोबा जी ने शिक्षा को स्वावलम्बी बनाने सम्बन्धित विचार आधुनिक शिक्षा का मुख्य आधार है। शिक्षा इस प्रकार से होनी चाहिए जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बना सके तथा आत्म–निर्भरता का आधार बनाने के साथ–साथ इसको सामाजिक रूप से भी सकारात्मक बनाने पर बल दिया। विनोबा जी ने भेदभाव को दूर करने तथा स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया जो आधुनिक शिक्षा के अभिन्न अंग है।

संत विनोबा जी ने धार्मिक शिक्षा को आवश्यक बताया उनकी धारणा कि शिष्यों को सभी धर्मो की सार्वभौमिक बातें बतायी जाए जिससे प्रत्येक व्यक्ति में विश्व मानव की धारणा का विकास हो। उन्होंने सभी धर्मो की सर्वमान्य शिक्षाओं को जीवन में लाने पर बल दिया तथा नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया।

विनोबा जी ने ब्रह्मचर्य तथा शिष्टाचार को विशेष महत्व दिया। उन्होंने वैदिक शिक्षा का रूप आध्यात्मिक तथा लौकिक पर और अपरा दोनों रखा था। उन्होंने आध्यात्मिक विद्या को सर्वश्रेष्ठ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थान दिया। सबके लिए शिक्षा पर बल दिया, उन्होंने कहा हमारे भारतीय समाज में आधुनिकतावाद तभी आ सकती है जब देश की सम्पूर्ण जनता शिक्षित होगी। समाज में किसी भी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, अमीरी, गरीबी, छुआछूत, भेदभाव न हो तथा वे अपने देश व समाज की प्रगति में सहाय बन सकें। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी सभी के लिए शिक्षा का प्रावधान है। गरीब बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान हो ताकि सभी बच्चे शिक्षा को प्राप्त कर सकें।

विनोबा जी ने स्वास्थ्य ज्ञान की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया उन्होंने कहा एक आदर्श समाज की स्थापना तभी होगा जब व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होगा। विनोबा जी ने एक स्वस्थ समाज मण्डल की व्यवस्था की और दैनिक जीवन में भोजन, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि के सम्बन्ध में विज्ञान का उपयोग आवश्यक माना है। आज भी शिक्षा में स्वच्छता को विशेष स्थान दिया गया है।

विनोबा जी ने विद्यालयों में गरीबों व प्रौढ़ों को शिक्षा देने की व्यवस्था की यह कार्यक्रम उन्होंने सामान्य शिक्षण के अतिरिक्त एक घण्टे के लिए रखा था। उन्हें भारत के जनमानस का पूर्ण ज्ञान था तथा सामान्य जीवन की समस्याओं एवं आवश्यकताओं से अभिनव रूप से सम्बन्धित थे। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित करने में प्रस्तुत भारतीय दार्शनिक विनोबा जी ने पूरा–योगदान दिया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा जी दोनों ही दार्शनिकों के धार्मिक, सांस्कृतिक विचार भारतीय दर्शन की आत्मा है। दोनों दार्शनिक भगवान व धर्म में विश्वास रखते है। वे ब्रहम का सम्मान करते थे जो सभी आत्माओं का स्त्रोत है। दोनों ही आत्मानुभूति अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति का विकास करना है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा दोनों ही सांस्कृतिक, धार्मिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं के प्रेरक थे। इन्होंने भारतीय समाज को शिक्षा और दर्शन के उस स्तर पर पहुँचा दिया जहां से विश्व के अन्य देश भारत से कुछ न कुछ ग्रहण कर सकते थे। इन दोनों महान् व्यक्तियों ने अपनी शिक्षा और दर्शन सम्बन्धी अवधारणाओं से भारतीय समाज को एक नई दिशा प्रदान की। धर्म, शिक्षा, सत्य, वास्तविक सौंदर्य, अध्यात्म और नैतिक मूल्यों की परिभाषाएं क्या हैं? इस पर भी इन्होंने विस्तारपूर्वक अपने विचार व्यक्त किए। भारत में प्रचलित शिक्षा पद्धति से आने वाली पीढ़ियों के लिए हम क्या कर सकते हैं इस बारे में भी दोनों का दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट एवं आदर्शकारी रहा है।

इन शिक्षाशास्त्रियों ने भारत की शिक्षण प्रणलियों और भारतीय संस्कृति में अर्न्तसम्बन्ध को स्थापित करते हुए इनके बारे में विस्तारपूर्वक लिखा। इन्होंने लोगों को बताया कि एक सभ्य और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षित राष्ट्र ही विश्वबन्धुत्व का पाठ पढ़ा सकता है। यदि प्रत्येक विद्यार्थी अपने ज्ञान का सही उपयोग करे तो वह न केवल अपने राष्ट्र बल्कि पूरे विश्व के लिए एक आदर्श बन सकता है। शिक्षा में अनुशासन और विनम्रता का महत्व भी इन दोनों विचारकों ने विस्तारपूर्वक बताया।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि रवीन्द्र नाथ टैगोर जी एवं संत विनाबा भावे दोनों आदर्शवादी है। तथापित उनके शिक्षा के उद्देश्यों में भिन्नता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक सभी प्रकार के विकास पर बल दिया है जब संत विनोबा भावे ने स्वतंत्र एवं विचारशील मूल्यों व विचारों पर बल दिया है। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी का वैदिक दर्शन उनकी शिक्षा का आधार है वे वेद और वैदिक संस्कृति के महान पोषक रहें रवीन्द्र नाथ टैगोर जी गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के आदर्श को अपनाने पर बल देते हैं। शिक्षा प्रणाली के क्षेत्र में उन्होंने गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के आदर्श को सर्वश्रेष्ठ ठहराया है विनोबा जी ने भारतीय गुरूकुल के आदर्श विद्यार्थी के नैतिक एवं चरित्रिक विकास पर बल दिया विनोबा जी विद्यालय का रूप भी गुरूकुल जैसा देना सर्वश्रेष्ठ मानते है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने धर्म को विशेष महत्व दिया है उन्होंने धार्मिक व नैतिक जीवन पर बल दिया है उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास माना है। विनोबा जी ने शिक्षा में धार्मिक तत्वों को प्रधानता दी विनोबा जी ने शिक्षा में आध्यात्मिक विद्या पर बल दिया है उनकी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य वैदिक शिक्षा में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के अतिरिक्त व्यावहारिक, शारीरिक, तथा व्यावहारिक शिक्षा का विकास करना है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा संत विनोबा भावे के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों ही दार्शनिकों के धार्मिक, सांस्कृतिक विचार भारतीय दर्शन की आत्मा हैं। दोनों ही दार्शनिक, भगवान व धर्म में गहरा विश्वास रखते है। इनके अनुसार भगवान में विश्वास रखना जीवन दर्शन का गुप्तमंत्र है, वे ब्रह्म का सम्मान करते थे, जो सभी आत्माओं का स्त्रोत है। दोनों ने धर्म सत्य, सुन्दरता, उत्तम और उचित अनुभव अपने वास्तविक जीवन से प्राप्त किए व उनके बारे में लिखा है। इनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की आध्यात्मिक एवं नैतिक शक्ति का विकास करना होना चाहिए। रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का बड़ा महत्व है। आधुनिक शिक्षा में उनका विशेष योगदान हैं उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक गुरूकुलों की स्थापना की और स्थान–स्थान पर अंग्रेजी के स्थान पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दी। दोनों ही दार्शनिकों का दर्शन मुख्यतः आदर्शवादी है। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार आधुनिक शिक्षा–प्रणाली में आवश्यक सुधारों पर विजय पाने के लिए बहुत प्रासंगिक है। भारत में प्रचलित शिक्षा पद्धति में सुधारों की आवश्यकता है और इनके विचार बहुत दूर तक हमें शिक्षा के उद्देश्य व मूल्यों की शिक्षा के फायदे में जागरूक बनाते है, जो उचित है। दोनों चिन्तकों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करना है। दोनों ही व्यक्ति शारीरिक, वैदिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक विकास पर बल देते हैं। वे सोचते हैं, जीवन व शिक्षा में कोई अन्तर नहीं है, उनका कहना है कि शिक्षा के हर पल को वैसे ही आनन्द के साथ जीना चाहिए जैसे कि जीवन के अन्य पल, रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा भावे दोनों भारत के देश के महान शिक्षा शास्त्री थे। उनकी शिक्षण प्रणलियां, दर्शन एवं भारतीय संस्कृति से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं ये दोनों वास्तव में उच्च कोटि के दार्शनिक व शिक्षा शास्त्री थे। ये दोनों महान आत्मायें सच्चे अर्थो में भारत की महान विभूति थे। इन्होंने मानव का भौतिक व आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा का एक मात्र लक्ष्य निर्धारित किया है। दोनों ही स्वतंत्रता के महान उद्घोषकों में प्रमुख स्थान रखते हैं। इन्होंने साधारण को धर्म के मूल तत्वों को समझाया तथा जीवन के लिए शिक्षा को उपयोगी बनाने पर विशेष बल दिया। उनकी शिक्षा का परम लक्ष्य सर्वागीण विकास करना है। रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं संत विनोबा भावे द्वारा दी गयी पाठ्य सामग्री व पाठ्यक्रम आधुनिक शिक्षा के बिल्कुल अनुरूप है। इस प्रकार की शिक्षा ऐसे पाठ्यक्रम की शिक्षा चाहती है। जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण हो, और व्यक्ति को आत्मनिर्भर बने। दोनों ही विचाराकों ने संस्कृति पर विशेष बल दिया है इनके अनुसार हमारी संस्कृति संस्कारों की संस्कृति है, यज्ञ की संस्कृति है, अध्यात्म की संस्कृति है, इसलिए हमारे विद्यालयों में इन सब बातों का होना अति आवश्यक है। दोनों ही विचारक अनुशासन का समर्थन करते हैं, और अध्यापक व छात्र के सम्बन्धों को एवं पिता पुत्र के बीच का संबंध पर बल देते है। उनके अनुसार स्नेह एवं श्रद्धा पर आधारित अनुशासन स्थायी होता है। बेसिक शिक्षा में अनुशासन का नाम उन्होंने विनय दिया है। विनय विनम्रता का द्योतक है, कठोरता का नहीं। दोनों महात्माओं ने विश्वबन्धुत्व की भावना को शिक्षा का लक्ष्य बताया है उनके अनुसार विश्वबन्धुत्व से तात्पर्य है कि सभ्य राष्ट्र एक–दूसरे के प्रति भाईचारे व प्रेम भावना रखें। शिक्षा का यह महान लक्ष्य आज की शिक्षा प्रणाली के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। दोनों ही दार्शनिक प्रजातांत्रिक प्रशासन का समर्थन करते हैं और अध्यापक तथा छात्र के बीच निरीक्षण की सहायता से प्रजातांत्रिक सम्बन्ध बनाने पर बल दिया है। शिक्षा को समझने के लिए हमारे छात्रों में ज्ञान को सही प्रकार से स्वीकार करना, सही विशिष्ट उच्चारण के साथ अर्थ प्रकट करना, विभिन्न देशों के लोगों के सही कार्य सम्बन्ध, उनके तरीके, उनके रीति–रिवाज, उनका इतिहास और संसार के इतिहास में उनकी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साधारण स्थिति, उचित समय में प्रस्तावित पद्धति के विकास को समझने के लिए अन्तराष्ट्रीयता को समझना आदि इसका उद्देश्य होना चाहिए।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जी एवं संत विनोबा भावे ऐसे महान युग के पुरूष हुए है। जिन्हें समाज सुधारक भी कहा जा सकता है। क्योंकि इन दोनों ने ही समाज में फैली बुराईयों के दुष्परिणामों से जन साधारण को अवगत कराया। इन दोनों संत–ऋषियों ने जात–पात, छुआछात, बाल, विवाह, ऊंच–नींच का खुलकर विरोध किया। दोनों महात्माओं ने जन शिक्षा व नारी शिक्षा का नारा बुलन्द करके एक ऐसा महान कार्य किया है जिसका आज भी भारतीय समाज में गुणगान किया जाता है। इन दोनों ने समाज में फैली धार्मिक भ्रान्तियों को दूर करके लोगों को ऐसा धर्म अपनाने की शिक्षा दी जो जीवन के शाश्वत मूल्यों के अनुसार है तथा जो धर्म अन्य धर्मो का भी समान आदर करता हो, इन्होंने ऐसे मानव धर्म को श्रेष्ठ धर्म माना है। इस प्रकार दोनों के द्वारा किये गये कार्यो का उद्देश्य एक ही था। वह था मानवता का विकास दोनों महात्माओं ने अपने भाषणों व प्रवचनों के द्वारा न केवल उपदेश दिये बल्कि पूरा जीवन इन समाज सुधारक कार्यो को समर्पित किया।

इनके कार्य करने के ढंग लगभग समान थे अतः इन्होंने जीवन में नैतिक मूल्यों व आदर्शो की स्थापना करने का महान कार्य किया। निःसन्देह वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा का अत्याधिक विकास हुआ हैं तकनीकी, विज्ञान, उद्योग, व्यवसायिक शिक्षा सब अपने विकास की चरम सीमा पर हैं और यह सब शिक्षा की ही देन है। यही कारण है आज के इस युग को मशीनी का युग कहा जाता है। अतः शिक्षा प्रणाली ने संसार के व्यक्ति को समान अवसर प्रदान किया है और पृथ्वी पर शांतिपूर्ण, उन्नतिशील, मानव के विकास एवं मानव–धर्म को श्रेष्ठ माना है।

भविष्य में शोध कार्य हेतू सुझाव –

- भारतीय तथा पाश्चात्य चिन्तकों के दार्शनिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन और उनका आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।
- महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का आधुनिक शिक्षा में योगदान।
- डा0 सर्वपल्ली राधा कृष्णन तथा रवीन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
- अरिवन्द घोष के शैक्षिक दर्शन का आलोचानात्मक अध्ययन तथा इनका आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव।

- भारतीय चिन्तकों के दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन तथा आधुनिक भारतीय शिक्षा पर उनका प्रभाव, आदि।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आचार्य, पंडित श्री राम शर्मा (2012),''रवीन्द्रनाथ टैगोर'' मथुरा : प्रकाशक युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट.
- गुप्ता, वेद प्रकाश (2015), ''टैगोर दर्शन'', प्रथम संस्करण, मेरठ : प्रकाशक, दर्शन विभाग कालेज. .
- राजस्वी, एम. आई. (2017), ''रवीन्द्रनाथ टैगोर की जीवन यात्रा'', दिल्ली : प्रकाशक राजा पाकेट बुक्स.
- देवस्थान, लक्ष्मी नारायण (2010), ''विनोबा के साहित्य विचार'', प्रकाशकः रणजीत देसाई, परमंधाम प्रकाशन, ग्राम सेवा मण्डल, पवनार वर्धा.
- नारायणस्वामी, के. एस. (2016), ''आचार्य विनोबा भावे एक जीवनी'', बैंगलोर : प्रकाशक सपना बुक हाउस.
- वर्मा, विश्व नाथ प्रसाद (2010), ''भारतीय दर्शन'' प्रथम संस्करण, आगरा, प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
- विशिष्ठ, डॉ. राजेश कुमार (2018), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'' भिवानी : प्रकाशक लक्ष्मी बुक डिपो.
- शर्मा, राम नाथ (2008), ''शिक्षा दर्शन प्रकाशक'', द्वितीय संस्करण, लखनऊ : हिन्दी समिति सूचना विभाग.
- शर्मा, रामनाथ एवं शर्मा, राजेन्द्र (2016), ''शिक्षा दर्शन'' प्रथम संस्करण, दिल्ली, प्रकाशक एंटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, बी–2 विशाल एक्लेब,
- सचदेवा, एस.एस. शर्मा के.के. – आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा, प्रकाशकः बुक डिपो 546 बुक मार्किट लुधियाना।
- सक्सेना, एम.आर.स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, प्रकाशकः सूर्या पब्लिकेशन निकट गर्वोमेंट कालेज, संस्करण (2007–08)

- Google : www.biography.com/people/rabindernath-tagore-9501212
- Google : simple.m.wikipedia.org/wiki/rabindranath_tagore
- Google : m.wikipedia.org/wiki/vinoba_bhave
- Google : www/vinobbhave.ogr/
- Google : www.mrgandhi.org/vinoba/bio.ntm - By : Dr. Usha Thakkar
- Google : in.ask.com/wiki/vinoba_bhave?log-en